পূর্ব রেলওয়ের কর্মীদের প্রতি 🖤 আবেদন

বন্ধুগণ,

काठीয় অর্থনীতির প্রাণধারা প্রবাহিত হয় রেল যোগাযোগ বাবস্থার ধমনীতে। কাজেই দেশের উন্নয়ন এবং পঞ্চবাধিক পরিকল্পনার সাফলা নির্ভর করে আঘাদেরই দক্ষতার উপর। পূর্ব রেলওয়ে কেবলমাত্র ইস্পাত, কয়লা এবং শিল্পাঞ্চলের সেবাই করে না, দেশের অন্যান্য অংশের অর্থ-নৈতিক বিকাশেও সাহায্য করে এবং বৈদেশিক মুদ্রা অর্জনকারী রপ্তানিযোগ্য সামগ্রীর পরিবহণেও ব্যাপ্ত।

আশা করি, রেলকর্মীরা তাঁদের সেই দায়িত্বে উদ্বন্ধ হবেন এবং নির্ভরযোগ্য, দক্ষ এবং বিশ্বস্ত এক যোগাযোগ বাবস্থা চালু রেখে দেশের উন্নয়নে সাহায্য করবেন।

্ আস্ক্রন আমন্ত্রা আওস্থাজ্ঞ ভুলি– রেলের চাকা চলবে জোরে, আরও জোরে আরও জোরে

জয় হিন্দ্

ভি পি সাহানী, জেনারেল ম্যানেজার, পুর্ব রেলওয়ে

रेल कर्मचारियों से अपील



प्रिय बन्धु,

रेलें हमारे वेश की ग्रथं व्यवस्था की प्राण हैं। वेश का विकास तथा पंचम पंच वर्षीय योजना की सफलता मुख्यतः हमारे कार्यकलापों पर निमंद है। पूर्व रेलवे न केवल इस्पात, कोयला ग्रीर ग्रीद्योगिक क्षेत्र की सेवा में संलग्न है बल्कि यह देश के ग्रन्य मार्गों की ग्रथं व्यवस्था में भी ग्रपना योगदान देती है तथा विदेशी मुद्रा ग्रजित करने के लिए निर्यात यातायात को भी सम्भालती है।

विगत कुछ महीनों में कुछेक रेलकमंचारियों द्वारा काम बन्द कर देने के कारण देश के विकास की गति धीमी पड़ गयी है तथा उद्योगों श्रीर इस्पात संयंत्रों को भेजे जानेवाले श्रावश्यक कच्चे माल के संचलन में शिथिलता आ गयी है श्रीर तथार माल दैनन्दिन जीवन की सामग्रियों, यथा, खाद्यान्न, खाने योग्य तेल, सब्जियों, फल श्रावि का परिवहन नियमित श्रीर शौद्राता से नहीं हो पा रहा है। इससे चारों श्रीर कमी की स्थित उत्पन्न हो। गयी है तथा मूल्यों में सामान्यतया वृद्धि हो गयी है। श्राज देश की मांग है कि हम, न केवल क्षति कमें पूर्ति करें बल्कि संचलन की गति को श्रीर भी तेज कर वें किन्तु यह उपलब्धि रेल कमंचारियों के सहयोग के बिना प्राप्त नहीं हो सकती।

इस श्रवसर पर पुनः एकबार रेलकमंचारियों को श्रवश्य श्रग्नसर होना चाहिए तथा देश के निर्माण के लिए सुनिश्चित, तेज और विश्वसनीय पश्चिहन की व्यवस्था प्रदान करने में मदद करनी चाहिए।

हमारा नारा है:---

रेल का चक्का तेज चलेगा, तेज चलेगा, ऋौर तेज चलेगा।

जय हिन्द

भी० पी० सहानी महाप्रवन्धक पूर्वरेलव



Railwaymen! If you win, you'll lose!

STOP AND THINK RAILWAYMEN.

Think of what your country has already given you.

You've been getting DA that increases with every price-rise. And, during the last 10 months your DA has risen 5 times.

The recent Pay Commission Report has brought you a further Rs. 109 crores. In addition to wages, you get facilities and benefits...because, the kind of job you do merits them.

Facilities like housing and travel passes, supply of basic needs through fair price shops at as many places as possible; medical and education facilities; recreation and so on.

Your union leaders, railwaymen, want the country to spend hundreds of crores more. Who will pay this money? The government? But the 'government' is you, and all of us who pay taxes in one form or another. So the price will have to be paid by you, your family, your community and millions of people like you.

So, railwaymen, if you win, you lose!

To balance the rise in the wage bill, the railways will have to increase fares and freight rates enormously.

IF THE STRIKE COMES ...

Food will cost more. And so will all the other essential commodities.

Even if you get what your union leaders demand, how much more will you buy? How much less?

Think about it railwaymen.

Stop the trains, and you'll make bad times worse. Have you really considered, as a worker, how many other workers' jobs will stop too?

Millions would be hit. People you will hate to hurt.

Railwaymen! Let's Talk...Let's Work.

Yes, railwaymen, you have problems and grievances. Everything costs more. So you need more. We can work things out. But you must stay at your jobs.

A strike will mean shortages and still higher prices. Remember: a strike weakens a nation's ability to pay you and your brother workers. Whom will you hit, railwaymen? You and your own people?

EASTERN RAILWAY

রেলকর্মচারীগণ ঃ আপনাদের জিতই আপনাদের হার হবে!

त्वसक्रमं हात्री भण अकट्टे एउट व एसथून !

ভেবে দেখুন, দেশ আপনাদের জন্মে কী করেছে।
আপনারা যে ছুর্ল্য ভাতা পাছেন তা মূল্যর্দ্ধির
মঙ্গে গঙ্গে প্রতিবারই বাড্ছে। গত দশ মাগে
আপনাদের ছুর্ল্য ভাতা বেড়েছে পাঁচ বার।
সম্প্রতি বেডন কমিশনের প্রতিবেদনের ভিত্তিতে
আপনারা একশ' নয় কোনি টাক।
প্রেছেন।

বেতন ছাড়াও আপনার। যে ধরনের কাজ করেন তার জন্মে আরও অনেক স্থ্যোগ স্থানিধা পান। থাকার কোয়াটার, বেলের পাস, বিভিন্ন জায়গায় ছায়্য মূল্যের দোকান মারকৎ অত্যাবশ্যক সামগ্রী কেনার স্থানিধা এবং চিকিৎসা, ছেলেমেয়েদের শিক্ষার ব্যবস্থা, মনোবিনোদন প্রভৃতি সব স্থাবিধার কথা ভেবে দেখুন।

আপনাদের ইউনিয়নের নেতার। চান দেশ আরও
কয়েক শ' কোনী টাকা পরচ করক।
কিন্তু এ টাক। দেবে কে ? সরকার ? কিন্তু 'সরকার'
মানে তো আপনারা, আমরা, আমরা প্রত্যেকে, যারা
কোনও না কোনও ধরনে কর দিয়ে চলেচি।
স্ত্রাং এর ভার বহন করতে হবে আপনাদের,
আপনাদের পরিবারওলিকে, আপনাদের বিভিন্ন
গোলিকে অর্থাং এক কথার লগে লগে ব্যক্তিকে।

তাই বলছিলাম ... আপনাদের জিতই আপনাদের হার হবে

ভেবে দেখুন না, নেতন ব্লদ্ধি করতে হলে রেলওয়েকে যাত্রীভাড়া, ট্রেনের মাঙল অনেক বাড়াতে হবে না কি ?

यि धर्म घर्षे इय्....

খান্ত দ্বেরর দান নেড়ে বাবে। সঙ্গে সঙ্গে অঞান্ত নিতাপ্রয়োজনীয় সামপ্রীর দামও চড়বে। আপনাদের ইউনিয়নের নেতার। বা দাবী করেছেন তা যদি আপনাদের দেওয়াও হয় তবু কি আরও বেনী জিনিস কিনতে পারবেন ?—না কম ? একবার শান্ত সনে ভেবে দেখুন। আপনার। ট্রেন চলাচল বন্ধ করে দিলে বর্তমান ত্রবস্থা কি চরম হয়ে উঠবে না ? কর্মী ভিসেবে আপনার। একবারও কি ভেবে দেখেছেন আরও কত ক্মীর কাজকর্ম বন্ধ হয়ে যাবে ?

লক্ষ লক্ষ্ লোকের গুরবস্থা হবে। এমন সব লোক, মানের অস্থাবিধায় ফেলন্ডে আপনারাই কুষ্ঠিত বোধ করবেন।

আসুন, তার চেয়ে আমরা আলোচনায় বসি… কাজের কাজ করি

हैं।। . बक्था मिछा त्य यानिनात्मत ममगा खाएए, यिख्तान खारू। मन किनित्मत माम ठर्फ्छ। याज्यन खानिनात्मत जान ठानिना ठाई। क्यांना ठिक। याज्यन खानिनात्मत जान ठानिना ठाई। क्यांना ठिक। याज्यन बन्दान विकास विकास विकास कार्यन नाता नाता नाता नाता विकास विकास कार्यन ना।। सम्बद्धी मार्नाई याज्यन क्यांना व्यापनाता कार्यन कार्यन व्यापनाता व्यापनात्मत व्यापनाता व्यापनात्व व्यापन

भूर्वे दिल अर्घ



পূর্ব রেক্তরে

কর্মচারীদের প্রতি ভূশিয়ারী

আপনি নিশ্চয় জানেন যে ভারতরকা আইন ও তদনুগ বিহিন্তে আপংকালীন ঘোষণা বলবং থাকাকালীন ফোনও সরকারী কর্মচারীর পক্ষে কোনরূপ ধর্মটে যোগদান সম্পূর্ণ ভাবে বেন ইনী। ১৯৭৩ সালের
২৬শে নভেম্বর হইতে ছ্য় নামের জন্য রেলওয়ে চাল্রীতে যে কোন ধর্মদি নিদিদ্ধ করিয়া গেজেট অব ইণ্ডিয়ার
২৫/১১/৭৩ তারিখের এম ৪২০২৫/১/৭৩ এল আর ১ নদ্বর সদলিত যে নির্দেশনামা প্রকাশিত হয় ভাছাতেই
ইহা সম্প্রভাবে ব্যাধ্যা করা হইয়াছে।

নিষেধাজ্য বলবং পাকা সক্ষেপ্ত এবং উপরোজ্ঞ অবস্থায় যদি কোনও বেল কর্মচারী বেআইনী ধর্মধটে যোগদান করেন এবং নিষেধাজা ভম্মের প্রচেষ্টা করেন বা প্রারোচনা বা প্রোচনার প্রচেষ্টা করেন বা ১৯৭১ মালের ভারতরক্ষা আইনের ১১৮ ধারাম বণিত কোনও নিষেধাজা ভম্মের প্রস্তৃতিমূলক কার্ম্য অথবা উজ্ঞাইনের ভিত্তিতে নির্ধারিত কোন আদেশ জনান্য করেন ভালা চইলে তাঁলাকে কারাদও (তিন বংসরকাল প্রায়ন্ত) বা জারিমানা বা উভাই ভোগ করিতে হইতে পারে।

ইহাও আপনার অন্থাত পাকা প্রয়োজন যে ভারতীয় রেলওয়ে আইন ১০০এ শাখা অনুমায়ী কোনও রেলওয়ে কমচারী কাজে নিযুক্ত থাকা কালে যদি ট্রেন, রেলকার বা অন্য কোনও রোলিং ইকের কোনও ষ্টেশন বা স্থান হইতে অন্য কোন ষ্টেশন বা স্থান প্রয়ন্ত পরিচালনার কোনও দায়িয়পূর্ণ কর্ত্তবের নিযুক্ত পাকেন এবং যদি তিনি সেই গন্তব্য ষ্টেশন বা স্থানে প্রেট্রানোর পূর্বে বিনা অনুমতিতে ঐ ট্রেন, রেলকার বা রোলিং ইককে অন্য অনুমোদিত রেলকমচারীকে নিয়ম মাফিক হন্তান্তর না করিয়া কমস্থল পরিত্যাগ করেন তাহা হইলে তাহাকে কারাদও (দুই বৎসর পর্যান্ত) বা জরিমানা (৫০০ টাকা পর্যন্ত) বা উভয়ই ভোগ করিতে হইতে পারে।

এতশ্বরা কমচারীদের দৃষ্টি আকর্ষণ করা হইতেছে যে যাঁহার। বেজাইনী ধর্মধন্টে যোগ্রান ক্রিবেন, ভাঁহাদের সরাস্ত্রি নিমুলিখিত ফল ভোগ ক্রিতে হুইনে :—

- (ক) ১৯৩৬ সালের পেমেন্ট অব ওয়েত্বেস্ এটি এর ৯ শাখা অনুসায়ী অনুপস্থিতির দিনওলির জন্য কোমও বেতন দেওয়া হবে না।
- (খ) ধর্মাঘটের দিন পর্বান্ত অর্জিত সমস্ত ছুটি পাতিল করা হবে।
- (গ) পর্যাঘটের শেষে যোগদানের পর নিম্নলিখিত বিষয়গুলির ব্যাপারে নতুন চাকুরিয়া হিসাবে গণ্য করা হবে
 - (১) ছুটির স্থানিদা
 - (২) পাস, পিটিও ইত্যাদি
 - (৩) পেনসন, অবসর গ্রহণের পর প্রভিডেও ফাতে স্পেশাল কণ্টি বিউশন ইত্যাদি

উপরোজ ব্যবস্থা ব্যতীত কমঁচারীদের জানানো মাইতেছে, এদি কোনও কমঁচারী বেআইনি ধর্মটো বেগিদান করেন বা এমন কোনও কার্বেট লিপ্ত হন যাহা ভারত রক্ষা আইনের হারা (১) শাখা ৩৭ ভক্তের তুবা বিবেচিত হয় (নাশকভামূলক কার্য্য) তাছা ছইবে তিনি ভারত রক্ষা আইনে এবং মিসা—১৯৭১ এর আইন অনুযায়ী গ্রেপ্তাহমোগা শিয়ে। বিবেচিত হউবেন এবং টাকুরী হউতে অপ্যারিত বা স্থায়ীভাবে বহিস্কৃত হইবার বোগা বিবেচিত হউবেন।

কৰিকাতা ১ট মে. ১১৭ প্ৰ

্ৰেমনাৰ মুখ্য কমি পুশাসন **অধী**কারীক

पूछा रेजवे

कर्मचारियां को चेतावनी

यापको इस वात की स्रवण्य जानकारी होगा कि जनतक शास्त रक्षा प्रधिनियम तथा इसके प्रधीन नियमों के प्रन्तगंत स्रापन स्थिति तामू है तथतक किसी सरकारी कमेचारी हास की जानेपाली काई भी हड़ताल पूरी तरह गैर कानूनी है। यह स्थिति भारत के राजपत्र में स्रादेश संस्था एस० ४२०२४/१/७५ एव० स्रार० १ दिनांक २५–११–७३ की प्रकाणित करके विजय रूप से स्पष्ट कर दी गयी है कि २६ नवस्वर, १९७३ से छः महीने के लिए रेलये में हड़वाल करने पर पावन्दी लगा दी गयी है।

अगर कोई रेल कमेंचारी प्रचलित आदेणों आर उत्तर बतायी गंभी स्थित के बावजूद गैर-कानूनी हड़ताल करता है और/अथवा भारत रक्षा नियम १६७१ के नियम ११०० के कियों भी उपबन्ध तथा उपयंगत नियमों के अन्तर्गत जारी किये गये किसी आदेश के उल्लंघन का प्रयास करता है या उनके उल्लंघन की तैयारी के लिए किसी को उक्त्याता है या उक्त्याने का प्रयास करता है तो उसे जेल की राजा दी जा राक्ती है जो तीन वर्गों तथ है। है। राज्यी है या जुमाना किया जा सकता है अथवा दोनों मजाएं थी जा सकती है।

धापको इसका भी अवश्य जानकारी होगी कि भारतीय रेल अधिनियम की धारा १००ए के अन्तर्गत अगर कियों रेल कर्मवारी को इयदी के दारान कियों गाड़ी, रेलकार अथवा कियों ग्रंथ नलस्टाक को एक रदेशन अथवा स्थान से अन्य स्टेशन अथवा स्थान के पहले विना अध्य स्टेशन अथवा रूपान तक चलान की जिम्मेवारी दी जाती है धार बहु ऐसे रदेशन अथवा स्थान पर पहुंचने के पहले विना प्राधिकार के अथवा अन्य अधिकृत रेल कर्मचारी को उक्त गाईं।, रेलकार अथवा चलस्टाक उचित रूप से सुपुद किये विना अपनी चुयदी त्याम देता है तो उसे जेल की सजा दी जायेगी जो दो वर्ण तक की हो सकता है या पांच सी रुपये का जर्माना किया जा सकता है अथवा दोनों सजाएं दी जा सकती हैं।

कर्मवास्यिं को यह भी सूचित किया जाता है कि इस गैर--कान्ती हड़ताल में भाग लेने के कारण उन्हें निम्नलिखित परिणाम स्वतः भगतने पड़ेंगे--

- (क) मजदूरी भूगतान श्रिधिनियम १६३६ की धारा १ के अनुसार गैर-हाजरी की अविधि के लिए वेतन नहीं दिया जायेगा।
- (ख) हड़ताल की तारीख तक श्राजित सभी कुट्टियां जन्त हो जायेंगी।
- (ग) इड्याल के याद इयुटी में अपने पर निम्नालिखन प्रयोजन के लिए एक नये कमंचारी के रूप में नयों सेवा आएम होगी।
 - 🕕 बुद्दी की पात्रता
 - (ii) पास. पार टीठ और आहे.
 - (iii) पेंशन, सेवा निवृत्ति के बाद भा प्य निधि में विशेष अशदान आदि।

उपर्युक्त बार्यों के अक्षाबा कमेचारियों को यह भी भूजिन किया जाता है कि कोई कमेचारी जो इस गैर-कान्ती हड़ताल मैं भाग लेगा अथवा ऐसा काम करेगा जो भारत रक्षा नियम को धारा ३०, नियस (१) (बोड-फोड का कोई काम करता) का उल्लंबन होगा तो उसे भारत रक्षा नियम के उपवन्धों तथा शान्तीरक भूरक्षा अधिनियम १६७१ के अन्तर्गत गिरणतार किया जा मकता है और सेवा से हटाया या वर्षास्त भी किया जा सकता है।

कलकत्ता, दिनांक ६ मई, १६७४

प्रमनाथ

मध्य वर्गमक अधिकारी

EASTERN RAILWAY

WARNING TO STAFF

YOU MUST BE AWARE THAT ANY STRIKE ON THE PART OF ANY GOVERNMENT SERVANT WHILE THE PROCLAMATIO OF UNDER THE DEFENCE OF INDIA ACT AND RULES THERE-UNDER ARE IN FORCE IS WHOLLY ILLEGAL. THIS PENT OF SPECIFICALLY CLARIFIED BY ORDER NO. S. \$2025/1/75-LR.I, DATED 25TH NOVEMBER 1973, PUBLISHED IN GAZET PHIBITING STRIKE IN THE RAILWAY SERVICES FOR A PERIOD OF SIX MONTHS FROM 26TH NOVEMBER, 1973.

INSPITE OF THE ORDERS IN FORCE AND THE POSITION STATED ABOVE, ANY RAILWAY WORKER RESORTING TO HAD DEPORTED TO CONTRAVENE OR ABETING OR ATTEMPTTING TO ABET OR DOING ANY ACT. PREPARATORY TO IN OF ANY OF THE PROVISIONS OF RULE 118 OF THE DEFENCE OF INDIA RULES 1971 OR ANY ORDER MADE UNDER THE MALE RENDER HIMSELF LIABLE TO IMPRISONMENT FOR A TERM WHICH MAY EXTEND TO THREE YEARS OR WITH FURTH.

YOU MUST ALSO BE AWARE THAT UNDER SECTION 100A OF THE INDIAN RAILWAYS ACT, IF A RAILWAY SERVANT, WHILL INTRUSTED WITH ANY RESPONSIBILITY CONNECTED WITH THE RUNNING OF A TRAIN, RAILCAR OR ANY OTHER ROLLING ON ONE STATION OR PLACE TO ANOTHER STATION OR PLACE, AND HE ABANDONES HIS DUTY BEFORE REACHING SUPLACE, WITHOUT AUTHORITY OR WITHOUT PROPERLY HANDING OVER SUCH TRAIN, RAILCAR OR ROLLING-STOCK IS LIKE THE SHALL BE PUNISHABLE WITH IMPRISONMENT FOR A TERM WHICH MAY EXTEND TO WITH FINE WHICH MAY EXTEND TO FIVE HUNDRED RUPEES OR WITH BOTH.

IT IS ALSO BROUGHT TO THE NOTICE OF STAFF THAT THOSE WHO PARTICIPATE IN THE ILLEGAL STRIKE WILL AUTOFER THE FOLLOWING CONSEQUENCES—

- (8) NO PAY WILL BE ALLOWED FOR THE PERIOD OF ABSENCE, IN ACCORDANCE WITH SECTION 9 OF THE P. WAGES ACT, 1936.
- (b) FORFEITURE OF ALL LEAVE EARNED UP TO THE DATE OF THE STRIKE.
- (c) COMMENCEMENT OF SERVICE AFRESH AS A NEW ENTRANT ON RESUMPTION OF DUTY AFTER' THE STRIKE PURPOSE OF—
 - (i) ELIGIBLITY FOR ZEAVE
 - (ii) PASSES, PTOs, etc.,
 - (iii) PENSION, SPECIAL CONTRIBUTION TO P. F. ON RETIREMENT, etc.

APART FROM WHAT HAS BEEN STATED ABOVE, IT IS ALSO BROUGHT TO THE NOTICE OF THE STAFF THAT ANYBOUTING IN THE HAEGAL STRIKE OR DOING ANY ACT WHICH AMOUNTS TO CONTRAVENTION OF THE PROVISIONS OF E (4) (DOING ANY ACT OF SABOTAGE) OF THE DEFENCE OF INDIA RULES IS LIABLE TO BE ARRESTED UNDER THE PROVINCE OF INDIA RULES AND MAINTENANCE OF INTERNAL SECURITY ACT, 1971 AND ALSO REMOVED OR DISMISSED FROM

Calcutta, 6th May, 1974

Prem Nath
CHIEF PERSONNEL OI

शूर्व (ज्ञल अर्य

भू छ व।

ভারতরক্ষা আইন ও তদতুগ বিধিবলে আপৎকালীন ঘোষণা বলবৎ থাকাকালী দরকারী কর্মচারীর পক্ষে কোনরূপ ধর্মঘটে যোগদান সম্পূর্ণভাবে বেআইনী ।লের ২৬শে নভেম্বর ইইতে ছয় মাসের জন্ম রেলওয়ে চাকুরীতে যে কোন ধর্মঘ চরিয়া গেজেট অব ইণ্ডিয়ায় ২৫।১১।৭৩ তারিখের এস ৪২০২৫।১।৭৩-এল আর-১ নদ্ধ যে নির্দেশনামা প্রকাশিত হয় তাহাতেই ইহা স্কম্পেষ্টভাবে ব্যাখ্যা করা হইয়াছে এই ধর্মঘটের নোটিস আইনগত নিষেধাজ্ঞা ভদ্দের প্রস্তৃতিমূলক কাজ অথা থারোচনা হিসাবে আইনতঃ গণ্য হইতে পারে। ভারতরক্ষা আইনবলে এ এস্তৃতিমূলক কাজ বা প্ররোচনা দণ্ডণীয়। ইহাতে তিন বৎসরের কারাদণ্ড বা জরিমান ই ইতে পারে।

ভि, लि, मार्व

জেনারেল ম্যানেজার

त्रमकसणतिश्व श व्याभनारम्य शिवर व्याभनारम्य शत्व शत्

दिस कर्म छ। ती ११० । এक ट्वे खिरव एनथुन !

ভেবে দেখুন, দেশ আপনাদের জন্মে কী করেছে।
আপনারা যে ছুমূল্য ভাতা পাছেল তা মূল্যবৃদ্ধির
সঙ্গে সঙ্গে প্রতিবারই বাড়ছে। গত দশ মাসে
আপনাদের ছুমূল্য ভাতা বেড়েছে পাঁচ বার।
সম্প্রতি বেতন কমিশনের প্রতিবেদনের ভিত্তিতে
আপনাবা একশ'নয় কোনি টাকা
পেয়েছেন।

বেতন ছাড়াও আপনারা যে ধরনের কাজ করেন তার জন্মে আরও অনেক স্থ্যোগ স্থবিধা পান। থাকার কোয়ার্টার, রেলের পাস, বিভিন্ন জায়গায় খায্য মূল্যের দোকান মারফৎ অত্যাবশ্যক সামগ্রী কেনার স্থবিধা এবং চিকিৎসা, ছেলেমেয়েদের শিক্ষার ব্যবস্থা, মনোবিনোদন প্রভৃতি সব স্থবিধার কথা ভেবে দেখুন।

আপনাদের ইউনিয়নের নেতারা চান দেশ আরও কিষেক শ' কোটা টাকা খরচ করুক।
কিন্ত এ টাকা দেবে কে ? সরকার ? কিন্ত 'সরকার' মানে তো আপনারা, আমরা, আমরা প্রত্যেকে, যারা কোনও না কোনও ধরনে কর দিয়ে চলেছি।
স্থৃতরাং এর ভার বহন করতে হবে আপনাদের, আপনাদের পরিবারগুলিকে, আপনাদের বিভিন্ন গোষ্ঠাকে অর্থাৎ এক কথায় লক্ষ্য লক্ষ্য ব্যক্তিকে।

তাই বলছিলায় ... আপনাদের জিতই আপনাদের হার হবে

यि असंघि इश्....

খালদ্রেরে দাম বেড়ে যাবে। সঙ্গে সঙ্গে অক্যান্ত নিত্যপ্রয়োজনীয় সামগ্রীর দামও চড়বে।

আপনাদের ইউনিয়নের নেতারা যা দাবী করেছেন তা যদি আপনাদের দেওয়াও হয় তবু কি আরও বেশী জিনিয কিনতে পারবেন ?—না কম?

একবার শান্ত মনে ভেবে দেখুন। আপনারা ট্রেন চলাচল বন্ধ করে দিলে বর্তমান ত্রবন্দা কি চরম হ উঠবে না ? কর্মী হিসেবে আপনারা একবারও কি ভেবে দেখেছেন আরও কত কর্মীর কাজকর্ম বন্ধ হ েযাবে ?

লক্ষ লক্ষ লোকের ছুরবস্থা হবে। এমন সব লোক, ঘাঁদের অস্ক্রবিধায় ফেলতে আপনারাই কুন্ঠিত বোধ করবেন।

जाम्प्रन, छात्र (छात्र जात्रता जालाछनाय चिम... कारकत काळ कति

হাঁ।, একথা সত্যি যে আপনাদের সমস্যা আছে,
অতিযোগ আছে। সব জিনিসের দাম চড়েছে।
অতএব আপনাদের আরও টাকা চাই। কথাটা ঠিন
তবে আমরা একত্রে বসে এর একটা সমাধান বার
করতে পারি। কিন্ত...আপনারা কাজ বন্ধ করবেন
ধর্মঘট মানেই অভাব স্কষ্টি— যার পরিণাম আরও
মূল্যবন্ধি। তুলবেন না, ধর্মঘট হলে আপনাদের
বেতন দেওয়ার অর্থনৈতিক ক্ষমতা ক্ষুধ্ব

रेल कर्मचारियो आपकी जीत भी आपकी हार होगी

रेल कर्मचारियो!

जरा सोचिये! ग्रापको पहले ही क्या कुछ मिल रहा है? ग्रापको महंगाई भत्ता मिल रहा है, जो महंगाई बढ़ने के साथ साथ बढ़ जाता है। पिछले 10 महीनों में ग्रापका महंगाई भत्ता 5 बार बढ़ाया गया है।

वेतन ग्रायोग की सिफारिशों से ग्रापको 109 करोड़ रु॰ मिले हैं। वेतन के ग्रलावा ग्रापको ग्रनेक सुविधाएं ग्रीर लाभ भी मिलते हैं क्योंकि ग्राप महत्वपूर्ण काम करते हैं।

आपको मकान, यात्रा-पास, ग्रधिकाधिक स्थानों पर उचित दर की दुकानों से ग्राम जरूरत की वस्तुमों की सप्लाई, चिकित्सा, शिक्षा ग्रीर मनोविनोद की सुविधाएं मिलती है।

आपकी यूनियनों के नेता चाहते हैं कि देश पर अरबों रूपयों का बोभा बढ़े। यह धन कीन देगा?
सरकार? लेकिन 'सरकार' तो धाप और हम सब है, जो किसी न किसी रूप में कर देते हैं।
इसलिये यह बोभ तो भापको, आपके परिवार, आपके समाज और देश के करोड़ों लोगों को उठाना पड़ेगा।

इसलिये रेल कर्मचारियो ! ग्रापकी जीत में भी ग्रापकी हार होगी !

जापका वेतन बढ़ाने के लिये रेलों को किराया और माल आड़ा काफी वढ़ाना पड़ेगा।

श्रगर हड़ताल होती है...

ग्रनाज ग्रीर ग्रन्य ग्रावश्यक वस्तुएं महंगी हो जाएंगी। ग्रागर ग्रापको, ग्रापकी यूनियनों के नेता जो मांगते हैं, वह दे भी दिया जाए तो क्या ग्राप उससे ग्रीवक वस्तुएं खरीद सकेंगे ? या पहले से भी कम ?

रेल कर्मचारियो! जरा ग़ौर से सोचिये...

भ्रगर रेल का चवका रुकता है . . . हड़ताल होती है तो हालत बदतर हो जाएगी । क्या ग्रापने वास्तव में सोचा है कि इससे कितने भीर लोगों का काम बन्द हो जाएगा ।

इसका ग्रसर करोड़ों लोगों पर पड़ेगा। ऐसे लोगों पर भी, जिन्हें नुकसान पहुंचाने की ग्रापने कभी मौची भी न होगी।

रेल कर्मचारियो ! श्राइये ! वार्ता करें ... श्रीर श्रपना काम जारी रखें ...

हां, ग्रापके सामने कुछ समस्याएं भीर श्रापकी कुछ वाजिव शिकायतें हैं। हर चीज मंहगी हो गई है। ग्रतः ग्रापको ग्रिंघक पंसे की जरूरत है। हम इसका हल निकाल सकते हैं। परन्तु...ग्रापको ग्रपना काम जारी रखना चाहिये। हड़ताल से चीजों की तंगी हो जाएगी। कीमतें भीर बढ़ जायेंगी।

याद रिखये ! हड़ताल से राष्ट्रीय प्रर्थ-व्यवस्था छिन्त-भिन्न हो जाएगी । इसकी चोट किस पर पड़ेगी ? प्राप पर भौर श्रापके भाइयों पर ।

Railwaymen & If you win, you'll lose \$

OP AND THINK RAILWAYMEN.

hink of what your country has already en you.

- ry price-rise. And, during the 10 months your DA has risen 5 times.
- e recent Pay Commission Report
- s brought you a further Rs. 109 crores.
- addition to wages, you get facilities
- d benefits...because, the kind of job
- u do merits them.
- cilities like housing and travel passes,
- pply of basic needs through fair
- ice shops at as many places as possible;
- dical and education facilities;
- reation and so on.
- ur union leaders, railwaymen, want the untry to spend hundreds of crores more.
- ho will pay this money? The government? It the 'government' is you, and all of
- who pay taxes in one form or another.
- the price will have to be paid by you, ar family, your community and millions

IF THE STRIKE COMES ...

Food will cost more. And so will all the other essential commodities.

Even if you get what your union leader demand, how much more will you buy? How much less?

Think about it railwaymen.

Stop the trains, and you'll make bad time worse. Have you really considered, as a worker, how many other workers' will stop too?

Millions would be hit. People you will to hurt.

Railwaymen! Let's Talk...Let's Work.

Yes, railwaymen, you have problems ar grievances. Everything costs more. you need more. We can work things But you must stay at your jobs.